कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 27–28

चमत्कारी जैविक तरल खाद जीवामृत

वीरेन्द्र कुमार पटेल, विवेक कुमार सिंह एवं शैलू यादव
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
सतना, मध्य प्रदेश 485334, भारत।

Email Id: – vs484001@gmail.com

वर्तमान समय को देखते हुए किसानों को जैविक खेती की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता है, इसलिए कुछ दशकों के रासायनिक उर्वरकों एवं खाद्य के प्रयोग से हमारी मृदा का स्वास्थ्य उर्वरा शक्ति तथा भौतिक रासायनिक एवं जैविक गुणो में लगातार गिरावट आ रही है, इस तरह भविष्य में भूमि पूरी तरह से रसायन युक्त तथा बंजर हो जाएगी, इसके लिए पुरानी कृषि प्रणाली को पुनः अपनाना होगा और कम लागत में अधिक मुनाफे के मूल मंत्र को सिद्ध करना होगा, प्राचीन काल से ही भारत जैविक कृषि आधारित देश रहा है, सदियों से विभिन्न प्रकार के खाद प्रयोग होते आए हैं, जो पूर्णता गाय के गोबर और मूत्र पर आधारित है, ऐसे ही अनेक प्रकार की तरल जैविक खाद आज परंपरागत रूप से उपलब्ध है।

जीवामृत का अर्थ

जीवन का अमृत अर्थात गाय का गोबर, गोमूत्र, गुड बेसन तथा खेत के मेड की मिट्टी और पानी के मिश्रण से बनाए जाने वाले पदार्थ, पेड़ पौधों फसलों को उनके जीवन चक्र को पूरा करने के लिए जिन–जिन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, उन सारे पोषक तत्वों की जड़ों की उपलब्धि करने की महत्वपूर्ण भूमिका ईश्वर ने अनंत करोड़ सूक्ष्म जीवाणु को दी है, जो की गाय के गोबर में पाए जाते हैं, इन जीवाणु को भूमि में पुनः स्थापना करने के लिए जीवाणुओं का जामन/ जोटन के लिए देसी गाय का गोबर सबसे लाभकारी होता है, जीवाणु की संख्या किण्वन क्रिया से बढ़ती है, गुड क्रिया की गति को बढ़ाते हैं ,तथा बेसन उनकी संख्या बढ़ाने में मदद करता है, इस प्रकार फार्मूला बना जीव अमृत।

जीवामृत बनाने के लिए जरूरी

- 200 लीटर पानी
- 8 से 10 लीटर देशी गाय का मूत्र
- 10 किलोग्राम देसी गाय का गोबर
- 1 किलोग्राम गुड
- 1 किलोग्राम बेसन
- खेत के मेड की एक मुट्ठी मिट्टी

बनाने की विधि बनाने की विधि

- सबसे पहले गाय के मूत्र को एक कंटेनर में रखें तथा इसमें गाय का गोबर 10 किलोग्राम मिला दें, गोबर को मूत्र में इस तरह से मिलाए की मूत्र के साथ पूर्णता घुल जाए, किसी भी तरह का कोई भी गांठ नहीं हो,
- इसके बाद 1 किलोग्राम गुड किसी दूसरे बर्तन में पानी के साथ घोले गुड को भी इस तरह घोले की किसी भी तरह का कोई ढेला नहीं रह जाए,
- अब घुले हुए गुड को गोबर के मूत्र में मिला दें, इन दोनों मिश्रण को अच्छी प्रकार से मिलाए।
- अब इसमें 1 किलोग्राम बेसन तथा एक मुट्ठी मिट्टी को मिला दें
- जब मिश्रण अच्छी तरह से मिल जाए तो उसमें पूरा 200 लीटर पानी मिलाकर किसी खुले स्थान पर 48 घंटे के लिए रख दें तथा

सुबह–शाम घडी की सुई की दिशा में एक – एक मिनट में घुमाये।

लाभ

- यह भूमि सूचना जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी एवं भूमि की उर्वरा शक्ति और मिट्टी के पीएच को बनाए रखने में मदद करता है।
- मिट्टी में जीवमृत डालने से केचुए की संख्या बढ़ती है, केचुए मिट्टी को भुरभुरा करते हैं, और पौधों की जड़ों में ऑक्सीजन पहुचाने में मदद करते हैं
- जीवमृत मिट्टी में पोषक तत्वों को तोड़ता है और जड़ तक पहुंचने में मदद करता है खेती में जीवामृत का उपयोग करने से फल सब्जी और अनाज बहुत परिपक्व होते हैं और अधिक स्वादिष्ट लगते हैं
- यह अमृत पौधों और फसलों में रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ता है

प्रयोग में सावधानियां

- खेत में नमी का होना आवश्यक है।
- एक खेत का पानी दूसरे खेत में जाने से बचाना।
- छिड़काव सुबह 10:00 बजे से पहले तथा शाम 3:00 बजे के बाद।
- इसको बनाने के 14 दिन तक इसका प्रयोग अधिक प्रभावी है
- जीवामृत को हमेशा छायादार व ठंडे स्थान पर भंडारण करें।
- जीवामृत के उचित लाभ के लिए 15 दिनों में एक बार प्रयोग करना आवश्यक है।

उपयोग की विधि

- सिंचाई के पानी के साथ
- सीधा भूमि की सतह पर दो पौधों के बीच में डालना
- खड़ी फसल पर छिड़काव
- खड़ी फसल पर छिड़काव के रूप में अधिकतम फसलों में 10 प्रतिशत जीवामृत का स्प्रे लाभकारी होता है। यानि 10 लीटर जीवामृत को 100 लीटर पानी में मिलाकर पत्तियों पर छिड़काव करते हैं।
- सिंचाई के पानी के साथ 200 लीटर जीवामृत प्रति एकड़ के हिसाब से प्रयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष

जीवामृत बहुत ही उपयोगी जैविक तरल खाद है। महंगे कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों की जगह इस जैविक खाद का इस्तेमाल करना फायदेमंद होता है, यह मिट्टी और पौधों पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालता है, इसकी खासियत यह है कि इसे घर पर बिना किसी अधिक लागत के बनाया जा सकता है, यही कारण है कि जीवामृत का उपयोग बहुत चमत्कारी है। किसान इस चमत्कारी जीवामृत जैविक खाद को अपनाने से न केवल फसल की उपज को बढ़ा सकते हैं, बल्कि अनाज फल फूल व सब्जियों का उत्पादन बेहतर रंग, स्वाद पौष्टिकता तथा विषाक्त अवशेषों के बिना कर सकते हैं इससे फसल की बाजार में अधिक कीमत प्राप्त हो सकती है, यह बहुत सस्ती तथा अधिक प्रभावित प्रक्रिया है।